देवकृत उपसर्गों का स्वरूप

जैन आगमों का चार अनुयोगों में विभाजन किया गया है।

1. द्रव्यानुयोग में जीव-अजीव आदि द्रव्यों का प्रतिपादन है।
2. गणितानुयोग में स्थान, काल, वस्तुओं की दूरी संख्या आदि का वर्णन है।
3. चरणानुयोग में साधना के लिए उपयोगी नियमोपनियमों का विवेचन है।
4. तथा धर्मकथानुयोग में कहानियों के माध्यम से सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण होता है। धर्म कथाएं प्रारम्भिक आयु में रूचि बनाने में सहायक होती हैं। आबाल-गोपाल, शिक्षित-अशिक्षित, पुरुष-नारी सबको कथाओं के प्रति झुकाव होता है। इसलिए दिगम्बर साहित्य में धर्म कथा को प्रथमानुयोग नाम दिया है। श्वेताम्बर-परम्परा में भी मूल प्रथमानुयोग तथा गण्डिकानुयोग ये दो वर्ग दृष्टिवाद के (बारहवें अंग) अंश माने हैं। प्राचीनकाल से वर्तमानकाल तक कथानुयोग का प्रभाव अतिव्यापक रहा है।

किन्तु प्राचीन और अर्वाचीन काल में कथा कहानियों के प्रति पाठकों की ग्रहणवृत्ति में काफी अंतर आ गया है। पहले कहानी के सभी प्रसंगों को श्रद्धा भाव से ज्यों का त्यों स्वीकार करके कथा के मुख्य प्रतिपाद्य नैतिक संदेश, आदर्श– Moral– को पाठक आत्मसात् कर लेता था। पर आजकल कथा कहानियों के हर मोड़, हर घटनाचक्र को, सत्य-असत्य, संभावनीयता-असंभावनीयता, यथार्थता-काल्पनिकता की तुला पर तोलने की आदत पड़ गई है और यदि कथा का कोई अंश प्रत्यक्ष बुद्धि से सिद्ध होता प्रतीत नहीं होता, तो उस कथा का मुख्य उद्देश्य भी अविश्वसनीयता की कोटि में आ जाता है। आज

धार्मिक कथाओं का पाठक शैशव काल को लांघ कर चिंतन-विश्लेषण के बौद्धिक स्तर पर आ गया है। अब परी-कथाओं के चित्रण उसको अपील कम करते हैं। ये ठीक है कि हेरी पॉटर का माया संसार उसे सुहाता है पर धर्म कथाओं की कितनी ही बातें उसे अतिरंजना लगती हैं। उनकी शंकाओं को समाहित करना अब धर्म गुरुओं के लिये चुनौती बनती जा रही है। उन्हें कथाओं की शब्दावली को भी बचाना है, तथा नूतन मस्तिष्कों को भाव भी समझाना है। श्रद्धा और तर्क का समन्वय बैठाना काफी कठिन कार्य हो गया है।

वस्तुतः आगमकारों को धर्म कथाओं का सहारा इसलिए लेना पड़ता है क्योंकि उनके बिना श्रोताओं को गंभीर तत्वों तक ले जा सकना दुरुह होता था। पंचतंत्रकार विष्णुशर्मा ने पशु पक्षियों की कहानियां बनाकर राजनीति सिखाई। ईसप ने भी छोटी-2 Parables से लोक तथ्यों को समझाया। रामायण-महाभारत तथा शताधिक पुराणों में कथाओं का ताना-बाना बुनकर आन्तरिक रहस्यों का उद्घाटन किया है। उन सब कथानकों को पढ़ते हुए अधिकांश जैन चिंतक यह निर्णय कर लेता है कि इस कथानक का कुछ भाग इतिहास है, कुछ पुराण है, कुछ Fact है, कुछ fiction है कुछ Realistic है तथा कुछ myth है कुछ Possible तथा कुछ Impossible है।

किन्तु वही पाठक जब जैन कथा विभाग में प्रवेश करता है और यदि उसी विश्लेषणात्मक बुद्धि को लेकर चलता है, तो उसे कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे ही कुछ प्रबुद्ध पाठकों द्वारा उठाए गए प्रश्नों की पृष्ठ भूमि पर अग्रिम पंक्तियों की दीवार चिनी गई है।

श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जीवन झांकी में दो-तीन प्रश्न बुद्धि को झकझोरते हैं।

1. दीक्षा के प्रथम वर्ष में दुइज्जन्तक तापसों के अप्रीतिजनक स्थान को छोड़कर भगवान अस्थिग्राम के बाहर शूलपाणि यक्ष के मन्दिर में रुके। रात को यक्ष ने उन पर प्रकोप किया। उसने हाथी का आकार बना कर प्रभु के शरीर को रौंदा, पिशाच बनकर उनके अंग-2 को नोंचा,

सर्प बनकर पूरे शरीर पर लिपट गया तथा स्थान-2 पर डंक मारे। तो क्या हाथी के पैरों के नीचे आने पर भगवान महावीर को कुछ चोट नहीं आई? उनकी हड्डियां उस प्रहार से भग्न नहीं हुई?

2. संगम देवता ने ध्यानस्थ प्रभु महावीर को एक ही रात में 20 तरह के भीषण कष्ट दिए। भयंकर धूल की वर्षा की, जो प्रभु के नासिका, कान मुंह आदि में भर गई। और प्रभु को सांस लेना दूभर हो गया। वज्रमुखी चींटियां उनके शरीर के एक छोर से दूसरे छोर तक छेदती हुई निकल गई। बड़े-2 डांसो ने शरीर में सुराख कर दिए और शरीर से रक्त बहने लगा। दीमकों ने शरीर में असह्य वेदना उत्पन्न की, बिच्छुओं ने डंक मारे, चूहों की फौज भगवान के शरीर पर चढ़ गई। नेवलों ने शरीर के मांस को काट-2 कर फैंक दिया, सर्प शरीर पर चिपट गए, स्थान-2 पर डंक मारे और विष प्रसार किया। चूहों की फौज जिस्म को कुतरने लगी, बिल जितने मोटे-2 छेद कर दिए, घावों पर मूत्र करके भीषण वेदना उत्पन्न की।

गजराज भगवान पर झपटा, भगवान को सूण्ड में पकड़ा और आकाश में उछाल दिया। फिर नीचे गिरते हुए शरीर को अपने दांतों में झेल लिया तथा जमीन पर पटक कर प्रहार करने लगा। हथिनी ने भी जमीन पर पटक कर मार गिराने, दान्तों से घायल करने तथा घावों पर मूत्र करने रूप वेदना उत्पन्न की। एक पिशाच ने भयंकर कष्ट दिए। सिंह ने अपने पंजों और दाढ़ों से भगवान के तन को विदीर्ण किया। फिर सिद्धार्थ राजा उपस्थित होकर कहने लगे– हे पुत्र! तुम इतना देह कष्ट क्यों सहन कर रहे हो। मैं दुखी हो रहा हूं। नन्दी वर्धन मुझे छोड़कर चला गया। वृद्ध और रोगाक्रान्त मेरी सेवा करो। फिर त्रिशला इसी तरह का विलाप करने लगी।

कुछ राहगीरों ने भगवान के पैरों के बीच आग जलाकर भोजन पकाया। एक चाण्डाल आकर भगवान के हाथ, कान, नाक, मस्तक, स्कन्ध आदि पर तीखी चोंच वाले पक्षियों के पिंजरे बांध देता है। उन पक्षियों ने अपनी चोंच और नाखूनों से भगवान के शरीर पर सैकड़ों

घाव कर दिए और घावों से रक्त बहने लगा। पत्थरों की वर्षा हुई, तेज आंधी ने बार-2 भगवान को जमीन पर पछाड़ दिया।

कलंकलिका वायु ने भगवान को आकाश में उठाया और चक्राकार में घुमाकर भूमि पर पटक दिया।

ज्वालाओं से प्रदीप्त काल चक्र का भगवान पर प्रहार हुआ और भगवान भूमि में घुटने पर्यन्त धंस गये।

बाद में एक देव विमान में बैठकर आया, और उसने स्वर्ग और अपवर्ग देने की पेशकश की। अंत में देवांगनाओं ने मादक रूप और मोहक संगीत से प्रभु को रिझाने का प्रयत्न किया, पर भगवान इन प्रतिकूल और अनुकूल परिषहों में भी अविचल बने रहे। संगम के सभी प्रयास निष्फल रहे।

इस परिषह-चित्रण में प्रश्नकर्ता उलझ रहा है, कहता है, क्या भगवान के शरीर से सचमुच ही रक्त बहा था? क्या उन्हें वास्तव में आकाश में उछाला गया था? क्या ये वास्तविकता है कि उनके जिस्म में घाव ही घाव हो गए थे? क्या प्रभु को जमीन पर पटक ही दिया था? क्या वे ध्यानस्थ ही खड़े रहे थे? या वे जमीन में वाकई ही धंस गए थे? क्या आग से उनके पैर जले थे, या सुरक्षित रह गए थे? क्या उन्होंने अपने माता-पिता को विलाप करते हुए खुली आंखों से देखा था? या अन्दर ही उन्हें कुछ ऐसा नजर आया था। ऐसे ही, क्या भगवान को देव का आमंत्रण अप्सराओं की अदाएं आंखों, कानों से गृहीत हुई थी या उन्हें प्रतीति ही हुई थी?

एक-2 घटना पर मन प्रश्नाकुल हो रहा है। यदि ये सब परिषह देह के स्तर पर हुए हैं तो देह स्तर पर होने वाले अन्य परिषहों के परिणाम इन परिणामों से भिन्न क्यों हैं। जैसे कि चण्डकौशिक ने डंक मारा तो प्रभु के शरीर से भी कुछ भिन्न किस्म का द्रव निकला। ऐसा संगम के सर्प प्रसंग में क्यों नहीं हुआ?

हरिद्रु गांव के बाहर भगवान ध्यानस्थ थे, तब निकटवर्ती किसी सार्थ

द्वारा सुलगाई अग्नि वायु की अनुकूलता के कारण भगवान के निकट आ गई और उनके पैरों को आंच लगी। अतः पैर कुछ काले हो गए। जबकि संगम के द्वारा जलाई अग्नि, इससे कहीं अधिक तीक्ष्ण बताई है, उसके उनके शरीर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा।

ग्वाले ने भगवान के कानों में तीखी सलाइयां (प्रचलित भाषा में कीलें) ठोंकी, उन्हें जब खरक वैद्य ने निकाला तो उससे पहले शरीर पर तेल की मालिश करके, आसपास की मांस-पेशियां ढीली की, सलाइयों को संडासी से निकाला तो खून भी साथ आया। भगवान के मुख से भी चीख निकली तथा वैद्य ने खून को पोंछकर घाव भरने वाली दवा कान में डाली।

जबकि सगंम के प्रसंगों में चूहों ने, नेवलों ने, पक्षियों ने उनके अंग-2 काटे। हाथी, सिंह आदि ने कुचला तो भी शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा दिखाया।

भगवान महावीर के साथ घटित कराई गई इन घटनाओं से सामान्य जिज्ञासु शंकाकुल होता है। यद्यपि कुछ मनीषी इन घटनाओं को टालने के लिए कह सकते हैं कि भगवान का समग्र जीवन मूल आगमों में नहीं है। ये तो चरित्र लेखकों की कल्पना हो सकती है। भगवान की जीवनी जो आचारांग के प्रथम श्रुत स्कंध के नौवें अध्ययन में, दूसरे श्रुत सकंध के अन्तिम अध्ययन में, सूत्रकृतांग के वीरत्थुई नामक छठे अध्ययन में, कल्पसूत्र के प्रारम्भ में, भगवती के अनेक स्थलों पर मिलती है। वह ही प्रामाणिक है। वहां पर इस तरह के अतिरंजित वर्णन नहीं मिलते।

परन्तु इस उत्तर से भी पूर्ण सन्तुष्टि नहीं हो सकती, क्योंकि भगवान का ये जीवन चरित्र मुख्यतः सर्वत्र ही मान्य रहा है तथा इस चरित्र की घटनाओं की उपेक्षा भी कर दी जाए पर उपासक दशांग सूत्र में पांच श्रावकों को भी ऐसे ही कुछ दैवीय परिषहों से पाला पड़ा दिखाया है। उपासक दशांग सूत्र, अंग प्रविष्ट आगमों में से एक है, अतः निर्विवाद रूप में प्रमाण है। वहां के कुछ पाठों का मुख्यांश उद्धृत किया जा रहा है।

1. कामदेव श्रावक की पौषधशाला में एक पिशाच उसके शरीर के तीक्ष्ण तलवार से टुकड़े-2 कर देता है। वह पीड़ा को बर्दाश्त करता है। फिर वहां सुविशाल हाथी घुसता है। चेतावनी देकर उसे सूण्ड में पकड़ उछालता है, दांतों से बीच में ही झेलता है, फिर तीन बार पैरों के नीचे रौंदता है। और श्रावक सहता रहता है। फिर सर्प बनकर गर्दन पर तीन बार लिपटता है, और विष भरी दाढ़ाओं से छाती को डसता है। वेदना प्रचुर होती है पर श्रावक झेल लेता है। फिर एक सौम्य देव प्रकट होकर कामदेव श्रावक की प्रशंसा करता है। तदनन्तर श्रावक अपनी प्रतिमा (ध्यान) को पारता है। यहां भी जिज्ञासु अचंभित है कि तलवार से टुकड़े-2 होने पर भी वह जीवित है। हाथी द्वारा आसमान में उछालते समय, रौंदते समय भी वह प्रतिमा में स्थित है। क्या ये दोनों कार्य एक साथ संभव हैं? क्या औदारिक शरीर इतने प्रहारों को सह सकता है?

2. चुलनीपिता श्रावक जब पौषधशाला में ध्यानस्थ था, तब उसकी परीक्षा लेने एक देव आया। पहले श्रावक को चेतावनी दी कि धर्म छोड़ दे, पर श्रावक नहीं घबराया तो उसके सामने एक-एक करके तीन पुत्रों को घर से उठाकर लाया, उसके सामने मार डाला। तीन-2 टुकड़े करके, गर्म तेल से भरे कड़ाहे में पकाये, और उस श्रावक के ऊपर पुत्रों के उबलते रक्त मांस का छिड़काव किया। पर चुलनीपिता इस कष्ट को धैर्य से सहता रहा। अंत में जब उस देवता ने उसकी मां को मारने की धमकी दी, तब श्रावक को क्रोध आ गया और उसे पकड़ने दौड़ा। वह धमकी देने वाला पुरुष (देवता) आकाश में उड़ गया। और श्रावक को गृह स्तंभ हाथ में आया। चुलनी पिता ने हो हल्ला मचाया तो घर से उसकी मां आई। उसने कारण पूछा– पता लगने पर मां ने कहा– बेटा, तुम्हारे किसी भी पुत्र को न किसी ने उठाया है, न मारा है, ये तो तूने कोई विदर्शन (अशुभ स्वप्न Bad dream) (Apte ने दर्शन का एक अर्थ dream तथा वि उपसर्ग का अर्थ Improper किया है, अतः विदर्शन का अर्थ हुआ बुरा सपना)

देख लिया है और अपनी प्रतिज्ञा को भंग कर दिया। अब शुद्धि कर लो। श्रावक ने दण्ड प्रायश्चित लिया।

यहां भी वही संशय उभरता है कि उस श्रावक ने अपने पुत्रों का वध आंखों से देखा था या उसे बन्द आंखों के बावजूद ऐसा प्रतीत हुआ था? क्या उसके शरीर पर रक्त मांस के छींटे पड़े थे? या उसे ऐसा महसूस हुआ था कि मेरे शरीर पर रक्त मांस के गर्म-2 छींटे पड़ रहे हैं।

3. सुरादेव श्रावक के तीन पुत्रों के पांच टुकड़े किये जाते हैं, रोग की धमकी पर विचलित होने पर उसकी पत्नी धन्या समझाने आती है।

4. चुल्लशतक के तीनों पुत्रों के सात टुकड़े किये जाते हैं। धन नाश की धमकी मिली तो विचलित हुआ, पत्नी ने आकर संभाला।

5. सकडाल पुत्र के तीन पुत्रों के 9 टुकड़े होते हैं। पत्नी वध की धमकी पर श्रावक प्रतिमा छोड़ देता है, और पत्नी ही आकर उसे बोध देती है।

इन घटनाओं को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि इन्हें आगम प्रमाणता का पुष्ट अवलम्बन मिला हुआ है। इन तथा ऐसी घटनाओं की सत्यता को किस परिप्रेक्ष्य में समझे। कुछ तो आगमों में ही उत्तर ढूंढने होंगे, कुछ मनोविज्ञान में तथा कुछ नूतन शोधों का सहारा भी लेना होगा। तभी इन घटनाओं के भाव को समझा जा सकेगा। अन्यथा अति तर्क शील मस्तिष्क इन घटनाओं को पूर्णतः असत्य और अतिशयोक्ति कहकर ठुकरा देगा।

इन घटनाओं के विषय में प्रमुख बात ये है ये विषयिगत स्तर पर (Subjective truth level) तो घटित हुई है, पर वस्तुगत या विषयगत स्तर (objective truth level) पर घटित नहीं हुई। जिनके साथ में बीती है, उन्हें लगा है कि मेरे शरीर को कुचला जा रहा है, उछाला जा रहा है, काटा-चीरा जा रहा है, जलाया छेदा-भेदा-रौंदा जा रहा है और इन क्रियाओं से जो पीड़ा और वेदना उन्हें अनुभूत हुई थी। वह मानसिक स्तर पर तो हुई पर शरीर उनका ज्यों का त्यों ध्यान में स्थिर रहा था।

ये उनकी महानता थी कि उन भीषण अनुभूतियों के मध्य भी अपने लक्ष्य से दायें-बायें नहीं हुए थे। न शरीर हिलाया, न आंखे खोली, न प्रतीत होने वाले किसी पीड़ा दाता के प्रति रोष-क्षोभ का भाव बना, न ये सोचा कि ये पीड़ा न हो। यही उनका धैर्य था। साधकों के इस मनोधैर्य का संदर्शन करवाना ही आगमकारों, कथाकारों का उद्देश्य रहा था। वे बताना चाहते थे कि धर्मात्मा व्यक्ति के ऊपर कितने ही कष्ट क्यों न आ जाए, वे धर्म से च्युत नहीं होते और हर संभव कष्ट को दिखाने के लिए देवता की सहायता लेना आवश्यक भी था।

आचारांग सूत्र के नौवें अध्ययन में प्रभु महावीर के साधना काल में आए सभी परिषह मानवीय स्तर के हैं। अतः उन पर किसी प्रकार की शंका, विचिकित्सा नहीं होती, पर देवकृत उपर्युक्त परिषहों को भी तो समाधान के करीब लाना जरूरी है। सत्य को पकड़ने के लिये एकांगी दृष्टि कोण छोड़कर व्यापक चिंतन अपनाना होगा। स्वयं भगवान महावीर स्वामी ने सत्य को स्थानांग सूत्र में दस तरह से समझाया है।

जनपद, सम्मत, स्थापना, नाम, रूप, प्रतीति, व्यवहार, भाव, योग एवं उपमा। ये दस पहलू सत्य को पकड़ने के लिये दिए हैं।

भगवती सूत्र में स्पष्ट करते हुए कहा कि भंवरा, व्यवहार की अपेक्षा कृष्ण वर्णी है, निश्चय की अपेक्षा पंचवर्णी है (निश्चय और भाव का एक ही अर्थ है।)

इन दस पहलुओं में वर्णित उपमा सत्य को 'साहित्य-शास्त्र' में काव्य सत्य के रूप में स्वीकारा है।

जैसे किसी गीत के मुखड़े में, एक प्रेमी किसी रूपवती कन्या के लिए कहता है– "मेरे सामने वाली खिड़की में इक चांद का टुकड़ा रहता है"। चांद के टुकड़े का अर्थ काव्य (उपमा) के रूप में आते ही रूपवान चेहरा बन जाता है, न कि आकाशीय ग्रह-उपग्रह। कोई सहनशील व्यक्ति समक्ष हो तो उसके प्रशंसक कहते हैं कि इसने जिन्दगी भर जहर ही जहर पिया है। तो जहर का भाव निकल गया– कटु

प्रसंग, कटुभाषा। भक्ति में डूबी मीरा के विषय में किंवदन्ती प्रचलित है कि उसे राणा ने जहर का प्याला पिलाया, पर उसने, उसकी भक्ति ने या उसके भगवान ने उसे अमृत बना दिया। यदि जैन परिप्रेक्ष्य में देखें तो जहर पीने वाला यों चामत्कारिक रूप से जी नहीं सकता जैसे कि धर्म रुचि अणगार ने कड़ुवा तुंबा[1] पी लिया तो वे बच नहीं पाए। काल कर गये। गज-सुकुमाल के सिर पर अंगारे रखे तो उनका शरीर जला ही जला, बचा नहीं, ये बात अलग है कि उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया। शरीर का धर्म शरीर के साथ। आत्मा का धर्म आत्मा के साथ। हम कह सकते हैं कि मीरा ने जहर जैसी बातें हज़म की और अमर हो गई।

जो जहर हलाहल[2] है, अमृत भी वही लेकिन।
मालूम नहीं तुझको, अन्दाज ही पीने के॥

भगवान महावीर पर किए गए देवोपसर्ग तथा श्रावकों पर किये गए देव-प्रहारों को समझने के लिए Subjective objective truth का सहारा इसलिये लिया है ताकि हम किसी तरह सत्य के कुछ करीब पहुंचें। प्रख्यात जादूगर प्रायः अपने मंचों पर कुछ अविश्वसनीय करतब दिखाते हैं। उनमें से एक ये है कि वे किसी युवती कन्या का गला काटकर सिर और धड़ अलग कर देते हैं और बाद में उन्हें जोड़कर जीवित कर देते हैं। क्या सचमुच गला काटा गया था? दर्शकों के अनुसार हां, जादूगर के अनुसार नहीं। एक ही घटना को हां, ना दो उत्तर मिले। वस्तुतः जादूगर की भाषा में यह Trick, sleight of hand, Hipnotism, Messemerism, सम्मोहन, हाथ की सफाई, माया कहा जाता है। जिससे दर्शकों के लिये कन्या का कत्ल होता है, पर कलाकार की कला है कि न उसने काटा, न कन्या कटी, न खून बहा, न बाद में कटे अंग जोड़े गए। पर दिखा ऐसा ही।

भगवान महावीर और श्रावकों के प्रसंग में जादूगिरी से कुछ

---

1 घिया, 2 साइनाइड जैसा तीव्र जहर

भिन्नता है। यहां वातावरण में रहने वाले अन्य मानवों को उन घटनाओं का बिल्कुल भी दर्शन नहीं होता, जब कि मुख्य पात्र के लिये सब कुछ हुआ होता है। उपासक दशांग में तो स्पष्ट लिखा है कि श्रावक के परिवार जन कहते हैं कि ऐसा कुछ नहीं हुआ, जबकि उनको वैसा लगा। उनके धरातल पर वह घटना घटी। कामदेव के मसले में तो श्रमण भगवान महावीर ने स्वयं फरमाया है कि श्रावक तेरे साथ ऐसा-2 हुआ। Magic shows में जनता सम्मोहन में है और प्रस्तुत प्रसंगों में मुख्य पात्र सम्मोहन में है। हां, ये सम्मोहन देवकृत हैं। आत्म सम्मोहन नहीं है। मनश्चिकित्सा के क्षेत्र में सम्मोहन– Hipnotism को एक सशक्त विधि के रूप में अपनाया जा रहा है। चिकित्सक द्वारा सम्मोहित व्यक्ति को वही कुछ प्रतीत होता है जो उसे सुझाव या संकेत दिया जाता है। सैंकड़ों आदमियों को जो घटना नहीं दिखती, वह सम्मोहित व्यक्ति को हकीकत के रूप में दिखती है। और सैकड़ों व्यक्तियों को जो यर्थाथतः दिखती है, उसके लिये उसका अस्तित्व नहीं होता। अर्थात् सम्मोहित व्यक्ति का सत्य अलग और असम्मोहित व्यक्ति का सत्य अलग होता है या हो सकता है। कुछ धर्म गुरुओं ने इस पद्धति को ध्यान और प्रार्थना के साथ भी जोड़ा है। वे इच्छुक व्यक्तियों को ध्यान कक्ष में बैठाकर, आंखें बंद करवाकर कुछ सुझाव देते हैं। और श्रद्धालु व्यक्ति सम्मोहित होकर उन्हीं सुझावों के सहारे, विविध दृश्य अपने सम्मुख देखने लगते हैं। उनके लिए बाहरी वातावरण सर्वदा असत् तथा भीतरी दृश्य सर्वथा सत्य प्रतीत होते हैं। उनकी मुख मुद्रा, आवाजें, हाथ पैरों की हरकत तथा अन्यान्य क्रियाएं सामान्य अवस्था वाले मानव के लिए पूर्णतः बेमानी और अहमकाना होती हैं। लेकिन प्रयोग करने वाले के लिये प्रत्येक क्रिया-प्रति क्रिया शत-प्रतिशत सही होती है। Auto Suggestion स्व-संसूचन से भी ऐसे ही परिणाम निकलते हैं।

सपनों में भी बहुधा ऐसा होता है। यदि किसी को सपने में कोई प्यार से छू रहा हो तो उसके लिये वह स्पर्श, वास्तविक ही लगता है

स्वप्न में उसे बंदर काट ले तो उसके मस्तिष्क की तंत्रियों पर पीड़ा का अंकन उतना ही होगा जितना जागृत अवस्था में काटने पर हो सकता है। जागृत और स्वप्नावस्था की अनुभूतियों का अध्ययन करने के लिये मनुष्य के शरीर में कुछ यंत्र लगाए गए। तथा उनके द्वारा मिलने वाले सन्देशों को बाहर कम्प्यूटर की स्क्रीन पर देखा गया तो जागरण और स्वप्नावस्थाओं में मस्तिष्क के स्तर पर संवेदनशीलता समान पाई गई।

जैन शास्त्रों में स्त्यानर्धि नींद की चर्चा आती है। उसमें मानव किसी भी पशु को उठाकर इधर से उधर रख सकता है। परन्तु उस मानव को ये पता नहीं होता कि मैं पशु को या वस्तु को उठा रहा हूँ। हाँ, नींद से जगने के बाद ऐसा भान सा रहता है मानों मैंने किसी पशु को सपने में उठाया था। उसके लिये वस्तु जगत भी अवास्तविक हो जाता है। शरीर के द्वारा या शरीर पर होने वाले संवेदन, संवेदन तंत्र पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ते। जब कि 'निद्रा' नामक नींद में अवास्तविक घटनाएं भी वास्तविक हो जाती हैं अर्थात् मानसिक अनुभूतियां, शारीरिक अनुभूतियां बन जाती हैं।

टैक्नोलॉजी के नए उपकरणों में 3D चश्मों और 3D फिल्मों का प्रचलन हुआ है। 3D की अनुभूतियों को Virtual world कहकर सम्बोधित किया जाता है। शब्दकोश के अनुसार उसका स्वरूप है। You can use Virtual to indicate that something is so 'nearly true' that for most purposes it can be regarded 'As True'

Virtual में आप घटना को लगभग इतना सत्य अनुभव करते हैं कि उस अनुभव को कई लिहाज से 'सत्य' ही कहा जा सकता है। यदि आप सामान्य फिल्म को देखते हैं तो वन में घूमते हुए शेर को दूर से देखकर आनन्द ले लेते हो। लेकिन 3D specs लगाकर देखोगे तो लगेगा कि आप उस वन में हो और शेर आपके सामने आ रहा है, आप पर आक्रमण करने जा रहा है। आपके Body reflexes बिल्कुल वही होंगे जो कभी वन में शेर को देखकर होते हैं। आप उस वन का हिस्सा न होकर भी एक चश्मे के करिश्मे से वन विहारी बन जाते है।

यदि आपके बगल में अन्य व्यक्ति ऐसा बैठा हो जिसे 3D चश्मे का, 3D फिल्म का ज्ञान न हो तो आपकी हरकतें देखकर आपको पागल भी कह सकता है। उसके लिये वहां न कोई वन है, न वन में घूमता हुआ सिंह है और न ही उस सिंह से आपको जान का कोई खतरा है पर आपके लिये तो वहां सब कुछ यथार्थ में हो रहा है। एक ही स्थान पर बैठे दो व्यक्तियों के परस्पर विरोधी अनुभवों का कारण 3D का होना और न होना है। आज के युग में यह टेक्नोलॉजी केवल मनोरंजन के लिये ही प्रयुक्त नहीं हो रही, अपितु मेडिकल, सेहत, मौसम, शिक्षा अर्थव्यवस्था, प्रशासन आदि सैकड़ों क्षेत्रों में लागू हो रही है। Virtual world, Virtual reality, Virtual environment, simulated life आदि नामों से इसे पुकारा जाता है और इसकी सैकड़ों websites खुली हुई हैं। इसकी उपयोगिता का संसार अंतहीन माना जा रहा है।

एक मेडिकल कालेज का नया डाक्टर जब इसी विधि से संचालित कम्प्यूटर चालू करता है तब वह अपने को एक कमरे में पाता है। जहां उसका मरीज लेटा हुआ है। वह उसकी हर चीज़ नोट करता है। उससे वार्तालाप करता है। उसे उसके बॉस आकर बताते हैं कि मरीज को ऐसे-2 संभालना है, वैसे-2 नहीं। वह उसके लिए स्क्रीन न होकर एक पूरा संसार होता है। जबकि किसी और के लिए वहां बिल्कुल शून्य है। वहां उसका समावेश है। पूरा विश्व उससे जुड़ा हुआ है। इसका एक फायदा तो ये है कि उस डाक्टर ने यदि Virtual patient को गलत इन्जैक्शन लगा दिया तो वह मरेगा नहीं, जब कि Real patient मर सकता है। वह अपनी भूल को सुधार सकता है। वहां किसी तरह का खतरा नहीं है पूर्ण सुरक्षित हैं वहां। That reality exists only in digital electric form in the memory of computer. उन अनुभूतियों को भ्रम (Illusion) नहीं कहा जा सकता क्योंकि भ्रम पूर्ण असत्य है जबकि Virtual reality आन्तरिक सत्य है। जिसे जानने के लिये कुछ वैज्ञानिक उपकरण सहायक होते हैं। कम्प्यूटर सिम्यूलेटेड फिल्म आदि के अलावा goggles, Head mounted Display (HMD) आदि

साधन तेजी से बाजार में आ रहे हैं। इनके जरिये द्रष्टा स्क्रीन को एक खिड़की समझता है और उसके माध्यम से दूर-2 के दृश्यों का अवलोकन करता है। यदि द्रष्टा ने अपने हाथों में Data-gloves पहन रखे हों तो वह अपने नूतन संसार की वस्तुओं के ठंडे गर्म स्पर्श का अनुभव भी कर सकता है, उन्हें दबाकर उनकी कोमलता कठोरता का पता लगा सकता है।

I-Phone लगा ले तो उसमें होने वाले स्पन्दनों, ध्वनियों को भी सुन सकता है।

ये उस वातावरण का वर्णन चल रहा है, जो बाहरी तौर पर है ही नहीं। न कोई मानव है, न बोल रहा है, न मोटा है, न पतला है। बस कुछ Digital electrons हैं जिन्हें वह व्यक्ति शत-प्रतिशत सत्य मानता है। और उन से वैसा ही व्यवहार करता है।

इसी तरह भगवान महावीर, कामदेव, चुलनी पिता प्रभृति श्रावकों के साथ हुए दैवीय उपसर्गों की हकीकत के बारे में समझा जा सकता है कि उनकी संवेदना तंत्रियों के ऊपर ये सारे उपसर्ग घटित हुए थे। उन्हें लग रहा था कि हमारे शरीर पर हाथी वार कर रहा है। हमारी गर्दन काटी जा रही है। हमारा अंग-2 रक्त स्नात हो रहा है। हमारे तन को छेदा भेदा जा रहा है। आकाश में उछाला जा रहा है। हमारे बच्चों को तलवार से काटकर, तेल के कड़ाहे में पका कर हमारे देह पर छिड़काव किया जा रहा था। पर उन विकट परिस्थितियों से उनका शरीर अछूता रहा था। उनका परिवार सुरक्षित रहा था। न हाथी पौषधशाला में घुसा, क्योंकि उसके घुसने लायक अवकाश ही उस कक्ष में नहीं होगा। उछालता तो छत से ही टकराना था, खुला आकाश वहां नहीं था। 3D फिल्म के द्रष्टा में और साधकों की प्रतिक्रिया में साफ अन्तर तो अवश्य झलकता है कि आजकल का द्रष्टा तो प्रत्येक कदम पर हर्ष-विषाद, भय से आक्रान्त हो जाता है, देह का अंग-2 विचलित, विक्षुब्ध और सक्रिय हो जाता है जबकि आगमिक साधक संकट की सघन अनुभूति के दौरान भी कंपित, विचलित और स्खलित

नहीं होते तथा जब-2 स्खलना हुई है तब-2 बाहर से उन्हें अवलम्बन मिला है तथा संभलें हैं।

जिज्ञासु का एक प्रश्न फिर भी यह रह जाता है कि साधना में लीन, प्रतिमा में स्थित, ध्यान में निमग्न साधकों को सम्मोहित करने वाला जादूगर या चिकित्सक वहां कोई नहीं होता। स्वप्न जैसी प्रमत्त अवस्था भी वहां नहीं होती। आत्म-परामर्श (Auto Suggestion) से भी वे अपने लिये भीषण परिस्थितियों का निर्माण नहीं करते। किसी 3D चश्में जैसे बाह्य उपकरण का भी सहारा वे नहीं लेते। फिर उन्हें मानसिक रूप से उन भयावह यातनाओं का दर्शन कैसे होता होगा। या कैसे करवाया जाता होगा?

इसके समाधान के लिए हमें देव शक्ति का, और उपमा के तौर पर नूतन साइबर तकनीक का सहारा लेना चाहिये या नैनो तकनीक का।

Cyborg नामक वैज्ञानिक (स्वयं अपनाया हुआ नाम है) ने अपने शरीर में बारीक चिप्स ट्रान्सप्लांट करवाई हुई है वे चिप्स इतनी संवेदनशील है कि मालिक के मानसिक प्रकंपनों को ग्रहण कर लेती हैं और फिर मीलों दूर बैठे मालिक के परिवारजनों को सोचा हुआ संदेश पहुंचा देती हैं। आने वाले युग में ऐसी चिप्स का प्रत्यारोपण साधारण मनुष्यों में भी संभावित है। ये चिप्स हज़ारों प्रकार के दृश्य भी तैयार कर सकेगी। उन चिप्स को बाहर से भी Control किया जा सकेगा। और उन चिप्स के द्वारा बाहरी संसार को भी। जो कार्य अधुनातन काल में यंत्रों के माध्यम से हो रहा है या होने जा रहा है। पुरातन काल में वे सब कार्य मंत्राधीन या देवाधीन होते थे।

अनुकूल मंत्र या देव मधुर दृश्यों की मानसिक संरचना कर देता था प्रतिकूल हो तो भीषण-कठोर और दुखद वातावरण की।

पूर्वोक्त उदाहरणों में परीक्षा लेने आए देवता मुख्य पात्र के मस्तिष्क में कोई Nano-Chips स्थापित कर देते होंगे और फिर बाहर से किसी Horror cassette का बटन ऑन कर देते होंगे। साथ ही साथ परीक्षणीय

व्यक्ति की देह-मुद्राओं और मनोभावों को देखते रहते होंगे। यदि देर तक दिखाई गई, सुनाई गई दृश्यावली-शब्दावली के बाद भी साधक का मनोभाव सुदृढ़ और संतुलित देख लेते तो फिर प्रसाद गुण युक्त सुमधुर दृश्य-शब्द जारी कर देते होंगे। यदि साधक किसी बिन्दु पर आक्रामक मुद्रा में आ जाता है तो देवता झटपट ओझल हो जाते होंगे। इन आधुनिक अन्वेषणों का सहारा ले कर हम प्राचीन काल के दैवीय उपसर्गों की उत्पत्ति और समाप्ति का स्वरूप समझ सकते हैं। इस सारी चर्चा का सारांश ये है कि दैवीय उपसर्ग शरीर के ऊपर होने वाली घटनाएं नहीं हैं। अपितु मन को महसूस होने वाली घटनाएं हैं जो इतनी तीव्रता-सघनता के साथ घटित होती हैं कि उपसर्ग के शिकार व्यक्ति को लगता है कि ये मेरे शरीर पर ही घटित हो रही हैं। इस प्रकार दैवी-उपसर्गों के Subjective अस्तित्व तथा objective नास्तित्व को मान लेने से जिज्ञासाओं की तृप्ति हो सकती है। अन्यथा तो दो ही विकल्प हैं, या तो श्रद्धा का आश्रय ले, बिना किसी बौद्धिक तर्क के, हर घटना को, जैसा लिखा, ज्यों का त्यों मान लो या फिर सर्वदा असत्य कहकर, असंभव मानकर नकार दो। इन अतियों से बचने का अनेकांतवादी मार्ग आपके सामने है।